an>

Title: Need to send invitation in time to the Members of Parliament for inauguration of works/projects in their constituencies.

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण) : महोदया, मैं व्यथित होकर एक अलग सा विषय शून्य प्रहर में आपके सामने रख रहा हूँ। मेरे क्षेत्र में मुम्बई पोर्ट ट्रस्ट आता है, मेरे क्षेत्र में मझगाँव डॉक लिमिटेड है। मुम्बई पोर्ट ट्रस्ट ने एक गेट का उद्घाटन किया, जब यहाँ पार्लियामेंट का सेशन चालू था। ऐन वक्त पर, मतलब कल उद्घाटन है, शाम को दिल्ली में मुझे फोन आया, मैंने कहा कि दिल्ली में लोक सभा का सत्र शुरू है, ऐसी स्थिति में आप उद्घाटन कैसे कर रहे हो? उसके बाद में एक और प्रोग्राम हुआ, उसका मुझे पता नहीं चला। फिर मझगाँव डॉक ने एक कोलकाता नाम की एक शिप का उद्घाटन किया, डिस्ट्रायर वेसल, उसके बाद में एक सबमरीन कलवरी का उद्घाटन किया और एक बड़े जहाज का भी कल उद्घाटन हुआ।

ये सारे उद्घाटन इस तरह से किए जाते हैं कि ऐन वक्त पर हमें बताया जाता है। उसी तरह से टाटा हॉस्पिटल में एक प्रोग्राम हुआ, हमारे हेल्थ मिनिस्टर वहाँ आए। शाम के वक्त मुझे यहाँ दिल्ली में फोन आया कि कल उद्घाटन है, टाटा हॉस्पिटल मेरे क्षेत्र के बाजू में है। वहां से किसी का फोन नहीं, इसमें अधिकारी लोग बहुत राजनीति खेल रहे हैं। ऐसा बार-बार हुआ, तो मुझे इतना सदमा पहुँचा कि आखिर में आपके पास मैंने प्रिविलेज मोशन दे दिया। ऐसा बार-बार हो रहा है। खासकर मेरी पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर से विनती है कि हमारा प्रोटोकॉल क्या है? निमंत्रण छपता है तो उसमें हमारा नाम नहीं होता है, टाटा हॉस्पिटल में तो फिर भी मैं गया क्योंकि मेरी सरकार के मंत्री आए हैं, मैं गया, मंत्री जी का स्वागत किया और बैठा, लेकिन मंच पर जाते समय मुझे कहा कि आप नीचे बैठो। मेरे क्षेत्र में प्रोग्राम हो रहा है, मेरी केन्द्र सरकार का प्रोग्राम हो रहा है और मुझे नीचे बैठने के लिए कहा गया। कल, परसों रेल के एक डिपार्टमेंट ने जो आश्वासित किया था, मैं उनका सही मायनों मे अभिनन्दन करना चाहता हूँ। दिघी पोर्ट से उन्होंने एक करार किया, एग्रीमेंट किया और उसके बाद रेल के बजट में जो कहा था कि रेल यूनिवर्सिटी प्रस्थापित करेंगे तो रेल यूनिवर्सिटी और मुंबई यूनिवर्सिटी का टाईअप करने का एक प्रोग्राम राजभवन में हुआ। प्रोग्राम सुबह 11 बजे है, 18 तारीख को सुबह 10 बजे मेरे घर पर आदमी आता है, बोलता है कि 11 बजे सह्याद्रि में प्रोग्राम है, जहाँ मुझे मेरे घर से पहुँचने में दो घंटे लगने वाले हैं। मैंने अपनी नाराजगी व्यक्त की तो फिर एस.एम.एस. आता है, सॉरी। ऐसा बार-बार हो रहा है। इसलिए मैं आपके पास प्रिविलेज मोशन भी दे रहा हूँ।

मैं चाहता हूँ कि मेरी सरकार, मेरे मंत्री इसके ऊपर खास ध्यान दें। खासकर पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर इस पर ध्यान दें। आज सुबह भी एक बात हुई, छोटा टॉयलेट वाला विषय आया तो ऐसी जो चीजें होती हैं, उससे आप व्यथित होते हो, लोगों के सामने जाते समय शर्मिन्दा होते हैं। मैं चाहता हूँ कि आप इसमें थोड़ा इनीशिएटिव लेकर निर्देश दे दें कि ऐसा आगे न हो।

माननीय अध्यक्ष : मेरे पास इस संदर्भ में आपका पत्र आया था, प्रोटोकाल का पत्र भी आया था कि क्या प्रोटोकाल होता है और उसका पालन क्यों नहीं हुआ है? I have called a factual note from the Government in this matter and we will take the decision accordingly. मैंने वैसे बुलाया है, लेकिन अगर पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर कुछ कहना चाहते हैं तो वह कह सकते हैं।

*m03

शहरी विकास मंत्री, आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्री एम. वैंकैय्या नायडू) : यह शिकायत केवल सावंत जी की ही नहीं है, कुछ और सदस्यों की इधर-उधर से कुछ शिकायतें आ रही हैं। सदन चलते समय आफिशियल कार्यक्रम अगर वहां होते हैं, तो सदन छोड़कर सदस्य वहां नहीं जा सकते हैं। अपने क्षेत्र में कुछ विकास के कार्यक्रम हो रहे हैं, कोई शुभारम्भ हो रहा है, उसमें जनप्रतिनिधि शामिल नहीं हो तो उससे गलत मैसेज जाएगा। हमें अलग-अलग जगहों से चार-पांच लोगों ने यह बताया है। एक बार इसे पूरा रिव्यू करके हम सभी स्टेट्स को यह निर्देश भेजा जायेगा कि ऑफिशियल प्रोग्राम्स/केन्द्र सरकार द्वारा होने वाले कार्यक्रमों को संसद चलते समय अवाइड कर, उन्हें शनिवार और रविवार को करें।

उन्होंने दूसरा प्वाइंट कहा है कि जहां केन्द्र सरकार का कार्यक्रम होता है, वहां अनिवार्य रूप से माननीय संसद सदस्य को मंच पर बुलाना चाहिए, उनका नाम शिलान्यास के समय भी होना चाहिए। उसके लिए प्रोटोकॉल होता है, सी.एम. और उसके नेकस्ट जो है, रुटीन प्रोटोकॉल को फौलो करना चाहिए। पार्लियामेन्ट में जो हुआ, उसका जिक्र करते हुए, हम दोनों के बारे में स्टेट्स को यहां से रिमाइण्ड करायेंगे और गाइडेन्स भी देंगे। यह अध्यक्ष महोदया का भी आदेश है।

माननीय अध्यक्ष : यह उन सबके लिए हो गया, जिनके कई पत्र हमारे पास आये हैं।